International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 72-73

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 72-73
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-07-2020
Accepted: 09-08-2020

सन्जू बाला
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
इन्दिरा गाँधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविघालय, टोहाना, फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
सन्जू बाला
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
इन्दिरा गाँधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविघालय, टोहाना, फतेहाबाद, हरियाणा, भारत

भारतीय संस्कृति एवं कोविड 19

सन्जू बाला

परिचय
भारतीय संस्कृति सर्वप्राचीन संस्कृति है। जब से मानव जाति का आरंम्भ माना गया है तब से Covid – 19 जैसी कई महामारियों जैसे :- प्लेग, टाइफाइड, स्पेनिश फलू, सार्स वायरस, इबोला वायरस आदि, किन्तु मानव समाज ने हमेशा अपने साहस ने हमेशा अपने साहस, ज्ञान एवं अनुभव से इन पर विजय पायी है। इस वैश्विक महामारी ने भी भारतीय संस्कृति के उपदेश - 'तेन त्यकतेन भुंजीथा .....'[1] को अपनाये जाने की महत्त्वत्ता को समझाया है। भारतीय संस्कृति हमेशा त्यागपूर्वक उपभोग को अपनाने का सुझाव सनातन काल से देती आई है। अर्थात् ऐसा विकास हो, जो सतत हो, मानव जीवन की प्रत्याशा को बनाए रखने वाला हो।

संस्कृति
संस्कृति शब्द सभ् उपसर्ग के साथ संस्कृत की डु (कृ) धातु से बनता है जिसका मूल अर्थ साफ या परिष्कृत करना है। ऐसा ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में मिलता है।[2] भारतीय संस्कृति भारत के विस्तृत इतिहास, साहित्य, भूगोल, विभिन्न धर्म, तथा उनकी परम्पराओं का सम्मिश्रण है। संस्कृति को हम मनुष्य की जीवनपद्धति, वैचारिक दर्शन एवं सामाजिक क्रियाकलापों के समष्टिवादी दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित कर सकते है।

Covid-19
Covid-19 या कोराना वायरस डीजीस-2019 कोरोना परिवार से सम्बन्धित एक उत्परिवर्तित वायरस है। जानवरों और मनुष्यों में फैलने वाला यह एक संक्रमण वायरस है। जॉच में सामने आया है कि इससे संक्रमित होने वाले व्यक्ति इस बिमारी से अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर स्वयं ही ठीक हो रहे हैं किन्तु कुछ रोगी जैसे हदय रोगी, कैंसर रोगी, रक्तचाप से ग्रसित रोगी इससे अधिक प्रभावित हो रहे है और मर रहे है।

भारतीय संस्कृति और महामारी Covid-19
इस महामारी ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण को बहुत परिवर्तित किया है। इससे पहले विदेशी तथा आधुनिकता की पोशाक पहने कुछ तथाकथित भारतीय नागरिक 'नमस्कार' जैसे संस्कार को भारतीयता की पिछड़ी सोच का परिणाम बताते रहे हैं, किन्तु अब जीवन जीने के लिए इसे अपना रहे है। अब समस्त विश्व में इस सनातन संस्कृति की पुनरावृत्ति हो रही है।

मैं यहाँ आपका ध्यान भारतीय संस्कृति के कुछ मौलिक संस्कारों को बताना चाहती हूं - जैसे हस्त प्रक्षालन यानि हाथ धोने का संस्कार, जो सबसे ज्यादा कारगर माना गया है। इस संक्रमण रूपी महामारी को रोकने का।

आचमन अर्थात् जल पीने के संस्कार, धूपदीप संस्कार - यह वातावरण की शुद्धि एवं मन की शुद्धि हेतु किया जाता है। क्योंकि ऐसा वैज्ञानिक रूप से सिद्व हो चुका है कि हवन सामग्री में प्रयुक्त होने वाली आम और पीपल की लकड़ी के धुएँ से वायरस मर जाते है।

उपवास का संस्कार मानव शरीर को स्वस्थ रखता है।

शुद्व एवं शाकाहारी भोजन खाने की परम्परा।

मृत लोगों को नहलाकर जलाने की परम्परा।

योग एवं साधना :-
योग से होने वाले लाभों से आज विश्व परिचित ही है। जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर मानव को स्वस्थ मानसिक रूप से संतुलित एवं ऊर्जावान् बनाए रखता है। गीता में कहा भी गया है - योगः कर्मसु कौशालम् ...।[3]

यह भारतीय संस्कृति ही है, जिसका मूल मंत्त है - सर्वे भवन्तु, सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया...[4] अर्थात् सभी सुखी होवें, स्वस्थ होवें और मंगलमय के साक्षी बने।

भारतीय संस्कृति के आधार पर ही विश्व, मानव कल्याण का विचार सृजित कर सकता है। 'ईशावास्यामिद सर्व'[5] अर्थात सभी प्राणी जगत् में अपने स्वयं का दर्शन करना इसका आधार है।

व्यजेदेकं कुलस्यार्थे....[6] एवं आत्मदीपो भवः [7] जैसे विचार मानव को अपनी संकीर्णताओं का परित्याग करके समस्त मानव जाति का हितैषी बनने का संदेश देते है।

निष्कर्ष

माना कि भारतीय संस्कृति में आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ 'चरकसंहिता' में इस महामारी के सामान्तर लक्षणों का उपचार, इस तेजी से फैल रही महामारी की उपेक्षा धीमा है किन्तु सनातन संस्कृति के कुछ विचारों को अपनाकर, संयमित दिनचर्या व्यतीत कर मानव अपना स्वयं का बचाव तो कर ही सकता है। और जब प्रत्येक मनुष्य अपनी सुरक्षा एवं बचाव करने के लिए तत्पर होगा तो बिना डरे मानव समाज इस महामारी से भी जीत ही जायेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. शंकराचार्य, ईशवस्योपनिषद्, गीताप्रेस गोरखपुर प्रो0 उमेश, व्याख्याकार
2. त्तहग्वेदीयम् ऐतरेयब्राह्मण, सम्पादक डा0 जमुनापाठक, गीताप्रेस गोरखपुर।
3. मिश्र श्यामदेव, श्रीमद् भगवद्गीता (2.50) गीताप्रेस गोरखपुर ।
4. गरूड पुराण अध्याय 35.51
5. शंकराचार्य, ईशावस्योपनिषद्, गीताप्रेस गोरखपुर।
6. चाणक्य नीति अध्याय 3.10
7. 'प्राक्कथन' धम्मपद गाथा और कथा पृ0 16